International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 939-941

वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्थाः महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता

चन्द्रजीत सिंह यादव
शोध छात्र, गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
मोहन दास करमचन्द गाँधी एक उच्च विचारों वाले व्यक्ति थे। इनके व्यक्तित्व की छवि सम्पूर्ण भारत पर गहराई से पड़ी। यह कर्मों पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। अपने इसी विश्वास के बल पर इन्होंने वर्षो से गुलामी कि जंजीरों में जकड़े हुये भारत देश को आजादी दिलायी। वर्तमान में भारत देश कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक व्यवस्था में तेजी से परिवर्तन आया है, इस परिवर्तन का कारण है भारत देश कि संस्कृति और आर्थिक व्यवस्था में वैश्विकरण का दखल जिन समस्याओं का सामना आज भारत देश कर रहा है, उन समस्याओं कि उपकल्पना गाँधी जी ने अपने जीवन्त काल में ही कर दी थी। महात्मा गाँधी जी का कथन है कि – ''मैं यह नही चाहता कि मेरे घर को ऊँची चादर दीवारी से घेर दिया जाये ओर खिड़कियों को मजबूती से बंद कर दिया जाये, मै चाहता हूँ कि सभी संस्कृतियों का प्रवाह मूक्त रूप से मेरे घर मैं हो परन्तु मैं उस प्रवाह में उखड़ने से इनकार करता हूँ।''

मूल शब्दः वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक और आर्थिक व्यवस्था

प्रस्तावना
वैश्विक अर्थव्यवस्था के समय में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के विचारों का महत्व अधिक बढ़ जाता है। गाँधी जी को वैश्विक समाज की समझ इसलिए थी क्योंकि उन्होंनें इंग्लैण्ड में उच्च शिक्षा प्राप्त कि थी और दक्षिण अफ्रीका में राजनैतिक संघर्ष कि दिशा प्राप्त की थी। गाँधी जी जन्म और दिल से हिंदुस्तानी थे, इस अनोखो मिश्रण के कारण उन्होंनें भारत कि स्वतंन्त्रता के लिए अगुवाई की और आत्मनिर्भर होने के लिए आत्म बल को बढ़ावा दिया। गाँधी जी ने भारतीयों के आंतरिक मन से विदेशी छाप को मिटाने के लिए स्वदेशीकरण और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को महत्व दिया।

गांधीवादी दर्शन यह बताता है कि ब्रिटिश उपनिवेशक के सार्वजनिक निर्माण कार्यों की अपेक्षा के कारण हमारी खेती आधारित भारतीय कृषि व्यवस्था पर दुष्प्रभाव पड़ा। गाँधी जी का कहना है कि जब वस्तुगत परिस्थितियों को अधिक महत्व दिया जाता है, तब नैतिक व्यवहार के मूल्यों में कमी आती है जो किसी भी देश के अवनति का कारण बनता है। अपनी इन बातों को प्रभावकारी रूप में गाँधी जी ने 'हिंद स्वराज' में व्याख्यातित रूप यह कहते है। वैश्विकरण की नीतियों को लेकर आज पूरा विश्व जिस प्रगति कि कामना करता है वह एक भ्रम मात्र है।

महात्मा गाँधी ने गांवों की आत्म निर्भरता व ग्रामीण कुटीर उद्योगों पर अधिक बल दिया है। वर्तमान में भूमण्डलीकरण और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को लगता है कि आर्थिक विचार से संबंधित विचारों पर गाँधी जी कि प्रासंगिकता कम महत्व रखती है परन्तु उदारीकरण और भूमण्डलीकरण के युग में गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता अधिक बढ़ जाती है।

भूमण्डलीकरण ने तृतीय विश्व के देशों को ससांधन पूर्ति का एक माध्यम बना लिया है इसलिए अपने–अपने अनुभवों के आधार पर अनेक देश जैसे चिली और ब्राजील इस वैश्विकरण का नकारात्मक और सकारात्मक प्रभाव निरंतर देखने को मिलता है। भूमण्डलीकरण, मशीनीकरण और कई प्रकार कि तकनीकों के प्रयोग से परंपरागत आजीविकाओं और श्रम–साधनो पर संकट आये है। अपनी आजीविका स्वंय चलाने वाला किसान दिनो दिन मजदूर बनता जा रहा हैं। इन्ही प्रभावों का खण्डन वह अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में भी करते है।

गाँधी जी की कही बातों में एक सदी का अंतर दिखायी देता है, परन्तु उनके विचार आज भी जीवंत जान पाते है। इक्कसवीं सदी आधुनिकता का युग है, वह सूचना तकनीकी, प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया और इंटरनेट का युग है। इन सभी तकनीकियों ने व्यक्तियों के जीवन को इस प्रकार प्रभावित किया है कि बिना इसके सुखद जीवन कि कल्पना ह्रास्यप्रद लगती है। इस अंधकार के काल में गाँधी जी के विचार आजीवन प्रकाश– पुंज के रूप में मार्गदर्शन करते है। वैश्विक बाजार में फ्रांसीसी जनसंख्या के सिद्धांतकार के रूप में जाना जाने वाला मैक लुआन ने वैश्विकरण या भूमण्डलीकरण को ' ग्लोबल विलेज' की संज्ञा देता है। यहीं वैश्विक गांव एवं बाजार पर आधारित अर्थव्यवस्था के इस दौर में गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता को बढ़ा देता है। प्रौद्योगिकी और तकनीकि के युग में गूगल, फेसबुक, ट्यूटर, इंटरनेट आदि की बहुलता है लेकिन ध्यान देने योग्य यह बात है कि इस वैश्विकरण और वैज्ञानिक तकनीकी व मशीन ने व्यक्ति के जीवन में वैश्विक वैमनस्यता को कही अधिक बढ़ा तो नहीं दिया है? क्या इसने आधारभूत विकास के अधिक असमानता तो नहीं ला दिया है? जब हम इन प्रश्नों का सवाल खोजने कि कोशिश करते है तब गांधीजी के विचारों की झलक दिखायी पड़ती है। आज के नवयुवा उद्योगपति और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को आदर्श मानते हैं लेकिन जब बात मानवीय मूल्यों कि आयेगी तो गाँधी जी के विचार ही सर्वोपरि होंगे। गाँधी जी पश्चिमी सभ्यता को अपने जीवन में आत्मासात करने के विरोधी थे क्योंकि तत्कालीन परिस्थितियॉ ही कुछ ऐसी थीं कि विश्व पश्चिमी सभ्यता को पूरी तरह से अपना नहीं सकते थे। इस विरोध की सभ्यता तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और व्यापारिक परिस्थितियों से संबंधित थी। चूँकि गांधीजी ने पश्चिमी शिक्षा ग्रहण कि थी इसलिए वह किसी भी परिणाम के आने से पहले ही यह अनुमान और अनुभव कर लेते थे कि पश्चिमी सभ्यता की आग में शामिल होने से हमारी सभ्यता का क्या होगा? इसी तथ्य पर 'पूरनचंद जोशी लिखते है कि – ''गाँधी दर्शन का

विरोध औद्योगीकरण से नही अनियंत्रित औद्योगीकरण के उस स्वरूप से है जिसके फलस्वरूप एक ओर स्वंय यूरोप में न्यूज बनी और बेरोजगारी, प्राकृतिक विनाश और विकृतियां पैदा हुई तो दूसरी ओर एशियाई देशों में गुलामी और शोषण के अलावा किसानों और दस्तकारो की आजीविका पर कुठाराघात हुआ।''

वैश्विकरण व पूँजीवादी व्यवस्था में जिन व्यक्तियों ने प्रगति की वह धनी व्यक्ति बने परन्तु पूँजीवादी व्यक्ति बनने के लिए व्यक्ति ने मजदूरों का शोषण किया। अपनी लालसा को सदैव बनाये रखा कुछ और और पाने कि जिज्ञासा में व्यक्ति धनी तो होता चला गया परन्तु अपनी नैतिकता को खोता भी चला गया। एक राजा चाहे जितने राज्यों पर विजय प्राप्त कर ले परन्तु उसकी असंतृप्तता बढ़ती ही जाती है पूँजीपति व्यक्ति का धन, शौर्य बढ़ता चला है, उसकी सम्पत्ति को उसके बाद उसके उत्तराधिकारी प्राप्त कर लेते है परन्तु अपने कर्मों का फल वही भोगता है।

भारत को राजनीतिक आजादी 1947 में मिली और आर्थिक स्वतंत्रता 1991 में मिली। 1990 के बाद से ही देश वैश्वीकरण का लक्ष्य बनाकर आगे चलने लगा। आर्थिक योजनाओं के साथ–2 कई नये–नये आयामों का आविर्भाव हुआ जैसे – आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद, संरचनावाद, विखण्डनवाद, उपभोक्तावाद आदि जो चरम सीमा पर व्याप्त है। गाँधी जी ने अपने दर्शन में सत्य, अहिंसा अपरिग्रह, श्रम, सादगी और नैतिकता को विशेष स्थान दिया। उन्होंने स्वदेशी विकेन्द्रीकरण, सहअस्तित्व, शोषणमुक्त व्यवस्था ओर समानता, स्थानीय स्वशासन व रामराज्य पर आधारित संरचना कि कल्पना की थी। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि गाँधी जी के विश्लेषण बदलाव कि रूपरेखा में कहाँ तक सक्रिय रूप में दिखायी देखे हैं। यह विचार महत्वपूर्ण है। वैश्विक स्तर पर किसी भी देश पर अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए सेना भेजी जाती थी परन्तु आज सेना की जगह व्यापारिक हस्तक्षेप ने ले ली है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र व देश को आर्थिक व्यापार द्वारा हानि व लाभ पहुँचाता है। वर्तमान में प्रमुख राष्ट्रों द्वारा विकासशील और कमजोर राष्ट्रों पर आर्थिक गुलामी की जंजीरों का स्थापित करने का प्रचलन जारी है। इस गुलामी कि व्यवस्था के लिए नई आर्थिक नीति या वैश्वीकरण की नीतियां ही जिम्मेदार मानी जाती है।

विकासशील और अविकसित राष्ट्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास अल्प है। इस कारण यह विकसित राष्ट्रों के ऊपर निर्भर रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि कमजोर राष्ट्रों को सूचना तकनीक के क्षेत्र में सहायता मिलती है परन्तु दूसरी तरफ नई उपनिवेशवादी व्यवस्था ने आर्थिक गुलामी के द्वार रास्ते खोल दिये है। जब किसी भी राष्ट्रों का वर्चस्व हो तब उस राष्ट्र कि राजनीतिक व्यवस्था पर दबाव समूह का बल बना रहता है। विश्व अर्थव्यवस्था में उदारीकरण निजीकरण और भूमण्डलीकरण का प्रभाव वैश्विक राजनीति पर प्रदर्शित हो रहा है। जिस कारण अनेक राष्ट्र स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर पाते है।

वर्तमान में विश्व भूमण्डलीकरण का प्रभाव प्रत्येक राष्ट्र पर है। अब राज्य उपनिवेशवाद का स्थान बहुराष्ट्रीय उपनिवेशवाद ने ले लिया है। भविष्य की इस समस्या की कलपना गाँधी जी ने आजादी पूर्व ही कर दिया था। वर्तमान के बहुराष्ट्रीय उपनिवेशवाद और कंपनियों के विस्तार को बढ़ावा देने वाले विश्व बैंक अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष और विश्व व्यापार संगठन का नापाक शिकंजा कसता जा रहा है। ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था ने अपने बुनियादी नीव आंतरिक संसाधनों पर निर्भरता के निर्णयों को खोते जा रहे हैं। यह सभी कारण अवनति को उत्पन्न करते है। इस दृश्य की कल्पना गाँधी जी ने वर्षो पूर्व ही कर दिया था। इसलिए गाँधी जी के विचारों का महत्व और प्रासंगिकता बढ़ जाती है।

आज विश्व अर्थव्यवस्था को संचार तकनीक ने ले लिया है। विश्व में जिस राजनैतिक और वौद्धिक नेतृत्व के न्याय कि बात की जाती है उसकी शक्तियां विकसित राष्ट्रों के हाथों में है जबकि गाँधी जी ने लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की बात कि थी। गाँधी जी ने यह आकलन पूर्व ही कर लिया था कि जब स्वार्थ और हित को महत्व दिया जायेगा तब सामाजिक व्यवस्था में अराजकता हिंसा की प्रवृत्ति और अनैतिक व्यवहार उत्पन्न होंगें। यह उनका आगामी विचार था जो सत्य दिखाई पड़ता है। डॉ0 आशा कौशिक इसे गांधीवादी चिंतन का पराऐतिहासिक स्वरूप कहती है जो सत्य मालूम होता है।

अगर हमें अपने सामाजिक आर्थिक और परिस्थितिजन्य समस्याओं से मुक्ति चाहिए तो हमें गाँधी जी के सिद्वांतों का पालन करते हुए स्वयं कि समस्याओं का हल विवेकपूर्ण करना होगा। यह बात पूरी दुनिया पर लागू होती है।

गाँधी जी ने अपने जीवन में मानवता और कर्मफल पर पर बल दिया तथा पूँजीवादी के साथ साम्राज्यवादी व्यवस्था का विरोध करके, वर्ग संघर्ष को न अपनाते हुये वर्ग समन्वय का रास्ता अपनाया। गाँधी जी ने अहिंसा का समर्थन किया परन्तु राजनीतिक और सामाजिक ढांचे का जिस प्रकार उन्होंने समर्थन किया वह असमानता को उत्पन्न करता था। कहीं न कहीं गाँधी जी भी दार्शनिक अराजकतावाद से प्रभावित थे। फिर भी गाँधी ने लघु उद्योग की वकालत सदैव की क्योंकि वह जानते थे कि भारत कृषि प्रधान देश है। यहां पर अनेक प्रकार कि संस्कृतियां पायी जाती है। अगर व्यक्ति लघु उद्योग करेगा तो वह आत्मनिर्भर होकर अपने सम्मान और नैतिकता को बचाये रख सकता है और प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं (भोजन, वस्त्र और आवास) की पूर्ति होगी।

महात्मा गाँधी ने अपने सम्पूर्ण जीवन को देश कि स्वतंत्रता और प्रगति के कार्य में लगा दिया। इन्होने सर्वप्रथम आत्मसम्मान को प्राप्त करने के लिए गुलामी कि जंजीरों को तोड़ने की बात कही और स्वदेशीकरण के विचारों को महत्व दिया। आज भारत देश जैसे अनेक राष्ट्र वैश्विकरण कि व्यवस्था में सम्मिलित हो चुके हैं, जिस कारण उनका वह आर्थिक रूप से प्रगति कर रहे हैं परन्तु विचारात्मक रूप में परतंत्र कि व्यवस्था में लीन होते जा रहे है। गाँधी जी के विचारो का मूल्यांकन आज अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि इन्होंने आजादी से पूर्व ही इस समस्थाओं का विवरण दे दिया था। गाँधी जी ने जिस रामराज्य कि कल्पना कि थी उसे प्राप्त करना आज के समय में संभव तो नहीं पर परंतु उनके विचारों पर चलने से हमारे देश कि संस्कृति, आत्मसम्मान व आत्मनिर्भरता बनी रहेगी। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की व्यवस्था ने विश्व व्यापार के लिये द्वारा खोल दिये परंतु इस व्यवस्था में साधारण जनमानस पिछड़ी रही गयी। इस कारण गरीबी, बेरोजगारी और निर्भरता से संबंधित अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई। इनका निराकरण करने के लिए गाधी जी ने एक साधारण और आत्मनिर्भर राष्ट्र कि कल्पना की थी। इसलिए गाँधी जी की प्रासंगिकता वैश्विकरण के दौर में और बढ़ जाती है।

संदर्भ

1. गाँधी वांडमय, खंड–01 प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1994.
2. गाँधी, मोहनदास करमचंद, दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, (अनु0) कालिका प्रसाद, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 2009.
3. गाँधी, मोहनदास करमचंद, सत्य का प्रयोग (आत्मकथा), नेहा

पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2010
4. नेहरू, पं0 जवाहरलाल, राष्ट्रपिता, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 1960
5. गाँधी, मोहनदास करमचंद, मेरे सपनों का भारत, नवजीन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबार, 1960
6. गाँधी, मोहनदास करमचंद, अहिंसा दर्शन, ग्रंथ विकास, जयपुर 2012
7. शीन, विसेन्ट, (अनु0) हेमेन्द्र, गांधीजी एक महात्मा की संक्षिप्त जीवनी, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, दिल्ली, 1994
8. गाँधी, मोहनदास करमचंद, मंगल प्रभात, साहित्यागार, जयपुर 2010
9. गाँधी, मोहनदास करमचंद, हिन्द स्वराज, सर्वसेवा संघ, वाराणसी, 2002
10. सिंह, अमित कुमार, भूमंडलीकरण और भारतः परिदृश्य और विकल्प, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2014.